स्वस्थ रहने का मिला वरदान है

कवि विनोद सिंह गुर्जर
महू, इंदौर, मध्य प्रदेश
मो॰ 9977110561

> आपको प्रेषित यह मेरी नवोदित रचना जन जन को योग हेतु प्रेरणा देगी । इसी भाव से सादर प्रेषित....

>

> स्वर से स्वर मिलाओ रे ।

> योग गीत गाओ रे ॥

> श्वाँसों का मधुर यही गान है।

> स्वस्थ रहने का मिला वरदान है ॥....

>

> जीवन की बगिया महकाने,

> योगा, सावन लाया है।

> तरुवर , शाख, लतायें, उपवन,

> पात-पात हरषाया है।

> कोकिला की मृदुल मुस्कान है।

> स्वस्थ रहने का मिला वरदान है ॥....

>

> बोझिल मुरझाये यौवन में ,

> नवचेतन उन्माद जगा है।

> घृणा निराशा दूर हुये हैं,

> मनमथ छोड़ विषाद भगा है।

> योग शक्ति का अनुसंधान है।

> स्वस्थ रहने का मिला वरदान है ॥....

>

> नित्यकर्म से पूर्व प्रातः उठ,

> प्राणायाम करोगे तुम ।

> सिद्ध मनोरथ सारे होंगे,

> कुछ पल ध्यान धरोगे तुम ।

> चित्त वृति का ये अनुष्ठान है।

> स्वस्थ रहने का मिला वरदान है ॥....

>

> ॐ -ॐ के उच्चारण को,

> अखिल विश्व ने जाना है।

> पातंजलि के योग सूत्र से,

> भारत को गुरु माना है।

> वेद वाणी का ये तो विधान है।

> स्वस्थ रहने का मिला वरदान है ॥ ...

> स्वलिखित ,मौलिक व अप्रसारित ॥

✍कवि, विनोद सिंह गुर्जर